शिक्षा से समाज में बदलाव ला रहे हैं सीआईएमपी के निदेशक डॉ. वी मुकुंद

योगदान : सिर्फ शैक्षणिक ही नहीं बल्कि सामाजिक बदलावों के लिए भी कर रहे काम, डॉ. दास ने दस साल में संस्थान को विश्वस्तरीय बनाया, समाज के पिछड़े तबकों के लिए कर रहे काम

एजुकेशन रिपोर्टर | पटना

चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान पटना के निदेशक डॉ. वी मुकुंद दास सिर्फ शैक्षणिक ही नहीं बल्कि सामाजिक बदलावों के लिए भी काम कर रहे हैं। इरमा के पहले फैकल्टी के तौर पर 1982 में शिक्षण कार्य से जुड़े डॉ. दास सीआईएमपी की स्थापना काल से ही निदेशक हैं। वर्ष 2008 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की आईआईएम की तर्ज पर बिहार में मैनेजमेंट संस्थान की स्थापना की कल्पना को मूर्तरूप देने के लिए डॉ. दास पटना आए। तब से लेकर आजतक 10 सालों के छोटे से अंतराल में ही संस्थान को विश्वस्तरीय बनाया है। यही कारण है कि सीआईएमपी की गिनती अब देश के चुनिंदा संस्थानों में होने लगी है। डॉ. दास के अनुसार संस्थान की इस तरक्की का श्रेय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को जाता है, क्योंकि उन्होंने संस्थान को आगे बढ़ने में हमेशा मदद की और कभी हस्तक्षेप नहीं किया। लेकिन इन सबके अलावा एक दूसरा पहलू भी है जिसपर डॉ. दास काम कर रहे हैं। और वह है सामाजिक बदलाव का। बिहार के पिछड़े बच्चों को समाज की मुख्यधारा में लाने से लेकर गांवों के कायाकल्प की कई योजनाओं पर वे काम कर रहे हैं।

दलित बच्चों को पढ़ाकर आईआईएम भेजने के लिए स्टूडेंट्स गाइडेंस सेंटर की स्थापना

सीआईएमपी के निदेशक डॉ. वी मुकुंद दास ने बताया कि समाज के पिछड़े तबकों को ऊपर उठाने के लिए हमने कई सारे काम किए हैं। खासकर एससी-एसटी छात्र-छात्राओं के लिए स्टूडेंट्स गाइडेंस सेंटर की स्थापना की। रिजर्वेशन के बावजूद पिछड़ी कैटेगरी से आनेवाले ये छात्र-छात्राएं आईआईएम या देश के अन्य मैनेजमेंट स्कूलों में नामांकन के लिए बहुत ही कम संख्या में क्वालिफाई कर पाते हैं। इन्हें आईआईएम जैसे संस्थानों में भेजने के लिए कैट (कॉमन एडमिशन टेस्ट) की मुफ्त तैयारी करवाई जाती है। इसका फायदा यह हुआ कि कई छात्र आज आईआईएम जैसे संस्थानों में नामांकन ले चुके हैं।

ब्यूटीफुल माइंड : स्लम इलाके के बच्चों को पढ़ाने का जिम्मा

डॉ. दास के प्रयास से ही ब्यूटीफुल माइंड की शुरुआत की गई। इसके तहत स्लम इलाकों के बच्चों को पढ़ाया जाता है। 5 से 15 साल के बच्चों को सीआईएमपी के फैकल्टी व छात्र पढ़ाते हैं। पढ़ाई के अलावा उनके पर्सनालिटी डेवलपमेंट के लिए भी काम किया जाता है। बच्चों के अंदर इतनी कॉन्फिडेंस आने लगा है कि वे अब कह रहे हैं कि बड़े होकर आईएएस, आईपीएस अफसर से कम नहीं बनेंगे।

गांवों के विकास योजना पर काम

डॉ. वी मुकुंद दास गांवों के विकास योजना पर भी काम कर रहे हैं। यह 20 साल की योजना है। इसके लिए सर्वे का काम पूरा हो चुका है। सीआईएमपी की ओर से इन गांवों में तकनीक के विकास के लिए वाईमैक्स तथा क्लाउड कंप्यूटिंग की शुरुआत की जाएगी। स्टडीज के दौरान सामने आए फैक्ट्स एंड फिगर सरकारी एजेंसियों के लिए फायदेमंद होंगे। डॉ. दास को रूरल मार्केटिंग का जनक कहा जाता है। उन्होंने कहा हम समाज में बदलाव लाने की कोशिश कर रहे हैं।

आज भी कायम डॉ. कुरियन से मिली ईमानदारी की सीख

डॉ. वी मुकुंद दास को डॉ. वर्गीज कुरियन के साथ काम करने का अनुभव है। वे कहते हैं कि ईमानदारी का पाठ उन्हीं से पढ़ा हुआ है। काम के दौरान कई ऐसे मौके आए जब लोगों ने प्रभावित करने की कोशिश की लेकिन डॉ. कुरियन से मिली सीख को आज भी अपने जेहन में बैठा रखा है। यह कभी बदलेगा नहीं। उन्होंने कहा हमने इसका व्यापक बदलाव देखा है।

Dainik Bhaskar ! Page.No- 08 ! Dated:10-12-2018